दर्शन

योद्धाओं, जाग उठो

धूल मेरे चेहरे की ओर उड़ रही थी जब हम सोनोरा में उन गांवों की तरफ गाड़ी चला के जा रहे थें जहॉ हम ने मिशनरियों के रूप में कई साल पहले सेवा की थी। एल–डायमेंटे, सैन फेलिपे, एल अल्टिमो एस्फोर्सू.... और इस तरह उन शहरों की सूची बढ़ती जाती है जहॉ हमने काम किया था। मैं फिर से उन तमाम लोगों के परिचित चेहरों को देखते हुए उन्हें बधाई देने के लिए बहुत उत्साहित थी। वहां पर क्या क्या बदला होगा?

सड़क बिल्कुल पहले जैसे ही लग रही थी और वैसे ही वहां किनारे पर उगे हुए कैक्टस के पौधे भी। बेशक, जिन बच्चों को मैंने संड़े स्कूल में वर्षों पहले पढ़ाया था, उन में से कई तो अभी बड़े हो गये होंगे, लेकिन मैं चाह रही थी कि कम से कम उन में से कुछ का पता लगा पाऊं और उनके जीवन को जानूं।

हम एल–कोयोट के आसपास पहुंच गए, और मेरे पेट में मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे जलन हो रही हो। यह यात्रा बहुत ही रोमांच से भरा हुआ था, लेकिन सब कुछ घबराहट के कारण गड़बड़ होता हुआ लग रहा था। मैंने अपने जीवन के बहुत साल इस छोटे से गांव के लोगों के साथ बिताया था। पहला घर जिसमें हम गए उसमें चारों ओर से उत्साह की आवाजें आने लगी और हम सब मिलकर एक दूसरे से गले मिलने लगे। मैंने उन से अपने कुछ विद्यार्थियों के बारे में पूछा। मेरी 'चाची' सोफिया का चेहरा गंभीर दिख रहा था क्योंकि वह मुझे एक बार में सारी बुरी खबरें देना नहीं चाहती थी।

एक घर जिसमें हमने दौरा किया, वहॉ वे सभी चुप थे जबकि वहां की लड़की जो मेरी कक्षा में पढ़ती थी उसने अपने बच्चे को अपनी गोद में बैठाया और वह कुछ शर्मिंदा दिख रही थी। वह एक लड़के के साथ भाग गई थी जो कि एक मसीही नहीं था, और उन्होंने शादी भी नहीं की थी, लेकिन एक साथ रह रहे थे। वह अब किसी कलीसिया में भी नहीं जा रही थी।

अन्य घरों के हमारे दौरे के बाद और इन सभी कहानियों से जो मैंने इकटठी थी, ऐसा लगा कि मेरे पेट की जलन अब सीमेंट में बदल गयी है। जिन बच्चों के साथ मैंने काम किया था उनका अब परमेश्वर के साथ रिश्ता ही नहीं रह गया था। एक का भी नहीं।

कहां गलती हुई थी?

जिन बच्चों के साथ मैंने काम किया था उनका अब परमेश्वर के साथ रिश्ता ही नहीं रह गया था। एक का भी नहीं।
कहां गलती हुई थी?

मुझे यकीन है कि आपको पहले से ही इस बात की जानकारी है, लेकिन हम अभी अंधकार की ताकतों के विरूद्ध युद्ध कर रहे हैं। यीशु मसीह हमारा सेनानायक है, और उसके पास लोगों की एक पूरी फौज है; एक ऐसी फौज जो पूरी दुनिया में फैली हुई है, और इस ग्रह की हर भाषा बोलते हैं।

परमेश्वर के पास एक वायु सेना, नौसेना और पैदल सेना है। उसके पास वह सबकुछ है जो इस संसार के किसी भी फौज के पास होनी चाहिए, और वह पूरी तरह दुश्मन के साथ के साथ इस युद्ध में व्यस्त है। केवल वही इस ग्रह पर के हर लोगों के लिए लड़ रहा है। और परमेश्वर चाहते हैं कि मैं और आप उन सेवा क्षेत्रों में भाग लें जो उसने हमें दिए हैं, और ऐसे लड़ें जैसे कि हमारा जीवन पूरी तरह उस पर निर्भर हो।

क्योंकि बहुत सारे जीवन इसी बात पर निर्भर करता है।

मैं समझता हूं कि सबसे बड़ा युद्ध जो हम लड़ रहे हैं वह हमारी अगली पीढ़ी; हमारे बच्चों के लिए है। और दुख की बात यह है कि दुश्मन जीत रहा है।

मैं ऐसी बात कैसे कह सकती हूं? क्योंकि मैं हर तरह के दिखावे से थक चुकी हूं। आप अपने आस–पास देखें। टी.वी के माध्यम, वीडियो गेम और स्कूल के माध्यम से दुश्मन अपनी शिक्षा हमारे बच्चों को दे रहा है। हर दिन घंटो–घंटो दुश्मन उनके दिमाग में अपनी शिक्षा भरता है, जो कि हम हर रविवार को कुछ समय बच्चों को पढ़ाते हैं उसकी तुलना में यह बहुत कम है। मैं अनेक कलीसियाओं में यह पाती हूं कि बच्चे मसीह के पीछे चलने को स्वीकार नहीं करते। वह यूथ समूह से जुड़े रहते हैं क्योंकि वहां उन्हें मज़ा आता है किन्तु चर्च में बैठने से इन्कार करते हैं जब उन्हें निर्णय लेना होता है।

बच्चों के बीच की सेवा आसान नहीं है और कमजोरों के लिए तो बिल्कुल भी नहीं। बच्चों की सेवा के लिए कुछ गम्भीर अफसरों की ज़रूरत है, और आप भी उन में से एक हो सकते हैं।

बार्ना समूह एक बहुत ही बड़ी कम्पनी है जो मसीह की देह के विषय बहुत खोज बीन करती रहती है, और उसकी खोज यह बताती है कि 12 की उम्र में ही बच्चा अपना मन बना लेता है कि उसे क्या विश्वास करना है और क्या नहीं। मैं बार्ना को प्रोत्साहित करना चाहती हूं कि उन्होंने यह खोज की, क्योंकि मैं इसकी पुष्टि वास्तविक जीवन द्वारा कर सकती हूं। यह बहुत आसान है कि अगर 12 की उम्र से पहले अगर आपने अपने बच्चे को प्रशिक्षित नहीं करता तो फिर उसके मन को बदलना मुश्किल हो जाएगा।

दुनिया के हर देश और संप्रदायों में से, मैं और आप और ख़ास कर के वे लोग जो बच्चों के बीच सेवा करते हैं, मसीह की देह होने के नाते अपने बच्चों के लिए लड़ने हेतु कदम आगे बढ़ाएं। हम युद्ध में सबसे आगे की पंक्ति में हैं। यह समय है कि हम इसे स्वीकारें और इसके लिए कुछ करें।

यह समय है कि हम परमेश्वर की सेना के जनरल बन जाएं। सूबेदार, मेजर, कर्नल आदि का ज़िक्र न करें क्योंकि मैं ऐसा मानती हूं कि परमेश्वर इन दिनों 5 सितारे अफसरो की तालाश में है, और मैं उन में से एक बनना चाहती हूं। मैं जानती हूं कि यह पागलपन है, किन्तु वास्तव में क्यों नहीं हो सकता?

क्या परमेश्वर ने नहीं कहा कि स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो?

''और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर सुइच्छा से करो। क्योंकि तुम जानते हो, कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही पाएगा।'' – इफिसियों 6:7–8

''मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।'' – मती 16:27

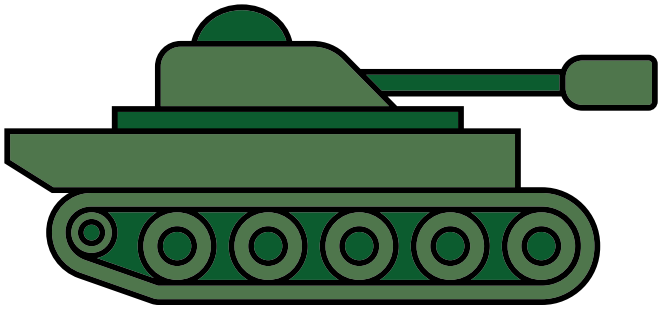

अगर सच कहूं, तो मुझे कोई अन्दाज़ा नहीं है कि जनरल बनने के लिए मुझे कितना और आगे जाने की ज़रूरत है। किन्तु मैं यह जानती हूं कि जहां मैं अभी हूं उससे बहुत कुछ आगे जाना है, और मैं लगातार परमेश्वर में बढ़ूंगी और सीखूंगी।

बच्चों के बीच की सेवा आसान नहीं है और कमजोरों के लिए तो बिल्कुल भी नहीं। बच्चों की सेवा के लिए कुछ गम्भीर अफसरों की ज़रूरत है, और आप भी उन में से एक हो सकते हैं।

मैं इस समस्या को अच्छी तरह समझाती हूं।

मेरे हाथ में एक बहुत बड़ी मछली थी, और मैंने उस प्यारी छोटी लड़की को उसने जो तोहफा मुझे दिया उसके लिए उसे धन्यवाद दिया। मैं नहीं जानती थी कि मुझे उस मछली का क्या करना है, तो मैंने गांव में जाकर उसे वहां छोड़ने के बारे में सोचा। किन्तु जब मैं रास्ते में ही था, मेरा संतुलन बिगड़ गया और मैं पीठ के बल गिरी और मैंने जिस हाथ में मछली थी, उसे हवा में ऊंचा उठा रखा था!

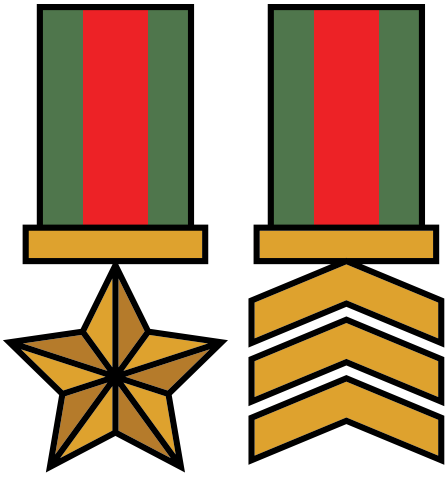

समुद्र के किनारे हम सुसमाचार सेवा के लिए गए थे। मैं और मेरी बहन बच्चों के बीच सेवा कर रहे थे और हमारे पिता बड़ो के बीच सेवा कर रहे थे। 25 बच्चों का एक समूह था और हमने गीत गाए और फिर एक खेल खिलाया और अपनी टूटी–फूटी स्पेनिश भाषा में उन्हें बाइबल की कहानी बताई। अंत में, एक लड़की ने मुझे तोहफे के रूप में एक मछली दी।

सालों बाद, जब मैं यह कहानी हमारी कलीसिया में बच्चों की पासवानी करनेवाले पास्टर गैरी डकवर्थ को बता रही थी तो उनके जवाब ने मुझे चौंका दिया! उन्होंने कहा, ''क्या आपको सचमुच ऐसा लगता है कि आपने उस सुसमाचार सेवा द्वारा बच्चों पर प्रभाव डाला?'' मैंने कहा, '' बिल्कुल ''। तब वह मुझसे कहने लगे कि असल में उस शाम आपने जो किया वह यह कि बच्चों को कुछ समय केवल व्यस्त रखा। उन्होंने कहा, ''बच्चों को एक–दो घंटे के लिए अपने साथ ले जाकर आप वास्तव में माता–पिताओं के बीच सेवा कर रहे थे, ताकि सुसमाचार सुनने में उन्हें कोई परेशानी न हो।''

यह सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया और मैं उनके शब्दों को स्वीकार नहीं कर पायी। आखिरकार मैं पिछले 10 सालों से बच्चों के बीच सेवा कर रही हूं। मैं जानती हूं कि मैं बच्चों के जीवन पर प्रभाव डाल रहा हूं। उस दिन गैरी ने जो कहा वह मैंने नहीं सुना। इसमें ज्यादा समय लगा, किन्तु एक दिन, काफी, काफी देर से, उनके शब्द मेरे अन्दर बैठ गये।

मैक्सिको की एक ख़ास संप्रदाय में, बच्चों के बीच सेवा कर रहे डायरैक्टर के साथ एक बड़े क्षेत्र पर भ्रमण के लिए गयी। उस स्त्री ने मुझे उनकी संप्रदाया द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के बारे में बताया, जहां उसके कांधों पर पूरे सप्ताह के बच्चों के बीच की सेवा की ज़िम्मेदारी थी। बहुत खुशी के साथ उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने पूरे कार्यक्रम का आयोजन किया, और कैसे वह बिना किसी परेशानी के उसे चला सकी। उन्होंने वयस्कों के साथ खत्म होने वाले इस कार्यक्रम के अन्तिम चरण के लिए कोन्सर्ट की योजना बनाई थी, और पूरा सप्ताह वह बच्चों के साथ कोन्सर्ट के अलग–अलग भागों का अभ्यास करती रही।
जब कोन्सर्ट खत्म हुआ, उन्होंने बताया कि ऊंची–ऊंची पदवी के अफसरों ने उन्हें सराहा और उनके अच्छे काम के लिए उन्हें मुबारकबाद दी। अफसर ने यहां तक कहा कि आगे के अच्छे कार्यक्रमों के लिए वह उन्हें याद रखेंगे।

उन से बात करते–करते मुझे अचानक पास्टर गैरी के शब्द याद आए। आखिरकार मुझे समझ आ गया।

अगर हम सचमुच युद्ध में हैं तो बच्चों को रंग भरवाने से या कलीसिया के विषय सही सवाल ज़वाब बताने से नहीं होगा। हम युद्ध में है, हमें यह नहीं भूलना चाहिए।

मेरी इस दोस्त ने बच्चों के साथ के पूरे सप्ताह को बस अंतिम चरण की तैयारी में लगा दिया। बच्चों ने कुछ नया नहीं सीखा, सिवाए इसके कि कैसे सीधी लाईन में खड़ा होना और अच्छी तरह गीत गाना है। यह सब तो वह स्कूलों में भी सीखते हैं।

मेरे पास हिम्मत नहीं थीं कि उन्हें बता पाता जो गैरी ने मुझे बताया था। मैं बस अपनी आंखो में आंसुओं को छिपाए थी। वह सही था। असली बच्चों की सेवा बच्चों को कुछ समय के लिए व्यस्त करना नहीं, ताकि माता–पिता बिना रूकावट चर्च जा सकें। न ही अच्छे कॉन्सर्टस् का आयोजन कि व्यस्कों का और मनोरंजन हो। वह बड़ो के बीच की सेवा है जहां बच्चो को कठपुटली की तरह इस्तेमाल किया जाता हैं।

अगर हम सचमुच एक युद्ध में हैं, तो किसी कॉन्सर्ट के आयोजन से कुछ फायदा नहीं होगा। उस सप्ताह उन बच्चों को प्रार्थना करना सिखाया जा सकता था! या फिर कलीसिया और मसीहियों की सच्चाई के बारे में बताया जा सकता था। उनके बीच सेवा की जा सकती थी।

अगर हम सचमुच युद्ध में हैं तो बच्चों को रंग भरवाने से या कलीसिया के विषय सही सवाल ज़वाब बताने से नहीं होगा। हम युद्ध में है, हमें यह नहीं भूलना चाहिए।

एक सीढ़ी है जिस पर हम सब चढ़ते हैं, जब हम अपने विश्वास और परमेश्वर के राज्य में बढ़ते हैं। केवल, यह वह सीढ़ी नहीं जिस पर हर कोई साधारण तरीके से चढ़कर मसीही जीवन जीए। परमेश्वर के पास एक दूसरी सीढ़ी है।

बच्चों की सेवा से शुरूआत करने वाली सीढ़ी, फिर यूथ पासवान बनना, फिर असिस्टेन्ट पासवान, और फिर आखिरकार कलीसिया का मुख्य पासवान बनना यह एक अलग सीढ़ी है। इसे मसीही जगत में ख़्याति की सीढ़ी कह सकते हैं। मैंने वीबीएस के पूरे सन्डे स्कुल के पाठ्यक्रम को लिखने के लिए कुछ रंगीन कागजों का इस्तेमाल किया। मैंने यह 30 कलीसियाओं से लेकर हज़ारो कलीसियाओं तक पहुंचाया। यह है मसीही ख़्याति की सीढ़ी।

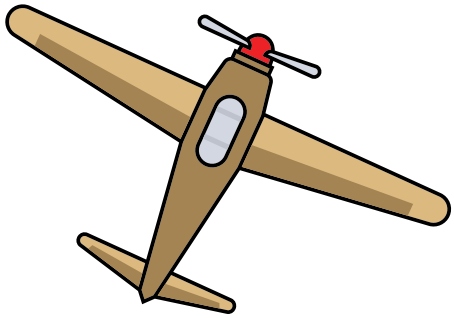

परमेश्वर का वचन हमें लगातार सिखाता है कि वह मनुष्य के अन्दर देखता है, न की बाहर। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दुनिया में कितनी किताबें हैं, जबतक कि जो परमेश्वर चाहता है वह मेरे अन्दर न हो, नहीं तो वह जिस तरह मुझे युद्ध में इस्तेमाल करना चाहता है, नहीं कर पाएगा। अगर मैं परमेश्वर की सेना में एक अफसर बनने की चाहत रखता/रखती हूं तो मैं उसे अपनी ख़्याति द्वारा घूस नहीं दे सकता/सकती। परमेश्वर जानता है कि वास्तव में, अन्दर से मैं क्या हूं। अगर आप अनन्तता में कुछ प्रभाव डालना चाहते हैं तो यह वह सीढ़ी है जिस पर चढ़ने से आप परमेश्वर की सेना में एक ऊंची पदवी पा सकते हैं। और यही वह सीढ़ी है।

इस सीढ़ी की हज़ारो हज़ार पैढ़ियां है, जहां तक आंख देख सकती है। इस सीढ़ी की सारी पैढ़ियां हमारे भीतरी मनुष्यत्व और परमेश्वर के हमारे रिश्ते के बारे में हैं। बाहर हमने क्या क्या प्राप्त किया है, इसका उससे कुछ लेना–देना नहीं है। इसका मेरी नौकरी, मैं कहां रहती हूं, कितना कमाती हूं, या कैसी सेवा करती हूं इससे कुछ लेना–देना नहीं है।

''यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है। मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।'' 1 शमूएल 16:7

आज ऐसे कई मसीही हैं जो गलत सीढ़ी चढ़ रहे हैं, ठीक जैसा यीशु के दिनों में हुआ करता था। परमेश्वर का निर्देश हमारे लिए यह है कि...
''उन को जाने दो; वे अन्धे मार्ग दिखाने वाले हैं; और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड़हे में गिर पड़ेंगे।'' – मत्ती 15:14

लोगों के पास उनके धार्मिक नियम होते हैं, जैसे कि हाथ धोए बिना खाना नहीं खाना, किन्तु इसके बावजूद वह अपने मनों में पाप करते रहते हैं। यीशु ने उन से कहाः

''पर जो कुछ मुंह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलतीं है। यही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।'' – मत्ती 15: 18–20

यह आज के हमारे नियमों पर भी लागू होता है, जैसा वह यीशु के समय पर लागू था। आज कलीसियाओं में, हमारे पास खाने के धार्मिक नियम नहीं है कि बिना हाथ धोए खाना नहीं खाना चाहिए। क्योंकि हम जानते हैं कि यह सेहत के लिए अच्छा नियम है, इसलिए अब यह धार्मिक नियम नहीं रहा। किन्तु कलीसियाओं में हमारे पास बहुत से अन्य नियम हैं। हमारे मन से जो निकलता है उससे हम उन नियमों की तुलना नहीं कर सकते।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दुनिया में कितनी किताबें हैं, जबतक कि जो परमेश्वर चाहता है वह मेरे अन्दर न हो, नहीं तो वह जिस तरह मुझे युद्ध में इस्तेमाल करना चाहता है, नहीं कर पाएगा।

परमेश्वर इस भीतरी सीढ़ी का बहुत ध्यान रखता है जिसके विषय में हम बात कर रहे हैं, और बाइबल में इसे साबित करने के लिए बहुत सी आयते हैं।

''और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखता है। तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा क्योंकि वह दिन उसे बताएगा इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा। और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है। जिस का काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते जलते।'' – 1 कुरिन्थियों 3: 12–15

वास्तव में परमेश्वर आपके जीवन के सारे निर्णय ले रहा है। अगर सच कहूं तो मसीही जीवन किसी और तरीके से जीने के लिए नहीं हैं।

यह वह सीढ़ी है जिस पर हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे चढ़ना सीखें। यह एक राजनैतिक तंत्र से कम नहीं जो कलीसियाओं में आ गया है कि पहले बच्चों के बीच की सेवा, फिर यूथ पासवान और फिर मुख्य पासवान।

सिर्फ बचने का एक ही उपाय है। दुनिया की सीढ़ी की तरह नहीं और न ही चर्च की सीढ़ी की तरह, किन्तु परमेश्वर के साथ इस भीतरी सीढ़ी में आप कुछ नहीं छोड़ पाएंगे। परमेश्वर की सीढ़ी पर चढ़ते वक्त जल्दी पहुंचने का कोई आसान रास्ता नहीं है। जैसा कि गोर्डन गिको की दिवार जो स्ट्रीट मूवीज़ में है, जो अपने अन्दर की सीढ़ी का इस्तेमाल करता है, दुनिया की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए। अगर आप आत्मिक जगत से आगे बढ़ने की कोशिश करोगे तो हमेशा अपने आप को हार में ही पाओगे। यह एक आराम से होने वाला कार्य है जिसमें एक मनुष्य को वर्षों लग जाते हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि बच्चे जब छोटे हैं हम तभी से उन्हें सिखाना शुरू करें। और सही सीढ़ी पर।

ठीक है, यहां आपके लिए कुछ साधारण सच्चाईयां हैं:

अधिकतर लोग गलत सीढ़ी पर चढ़ते हैं।

या तो वह पैसा, प्रसिद्धि और सफलता के लिए दुनिया की सीढ़ी पर चढ़ते हैं नहीं तो पैसा, प्रसिद्धि और सफलता पाने के लिए मसीही नाम की सीढ़ी पर चढ़ते हैं। पैसे, ख़्याति और सफलता के लिए मैं आपकी आंखे परमेश्वर की सीढ़ी की तरफ खोलना चाहती हूं! (हालांकि तनखव्वाह हमें अनन्तता में मिलेगी)। परमेश्वर की सीढ़ी परमेश्वर के स्वभाव, आज्ञाकारिता, विश्वास, ईमानदारी और पूरी रीति से उसकी सेवा करना सीखना है। यह अपने जीवन में आत्मा के फलों के साथ जीना है। परमेश्वर की सीढ़ी वह है जहां आप अपने अधिकारों को परमेश्वर को देते हैं और वापस नहीं लेते हैं। इसका अर्थ है कि वास्तव में परमेश्वर आपके जीवन के सारे निर्णय ले रहा है।

अगर सच कहूं तो मसीही जीवन किसी और तरीके से जीने के लिए नहीं हैं। किन्तु हमारे आस पास के सभी मसीही ऐसा ही करते हैं।

मैं दुनियाभर में मसीहियों को देखती हूं जो नाम, पैसा कमाने के लिए संप्रदायों की सीढ़ी पर चढ़ते हैं, जिस कारण उनका भीतरी मनुष्य शिशु ही रह जाता है। मैं इन्हें समझ नहीं पाती। क्या वे वास्तव में ऐसा सोचते हैं कि वे परमेश्वर को बेवकूफ बना देंगे?

वास्तविकता यह है कि सीढ़ी पर के सभी कदमों के लिये भी हमें सभी स्तरों में लोगों की जरूरत है, । यह करने का सबसे अच्छा तरीका होगा अगर ge lc चढ़ाई शुरू करे।

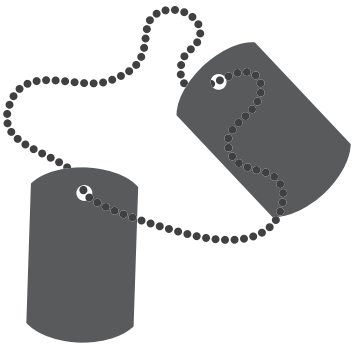

1. आप और मुझे हर समय चढ़ते रहने की जरूरत है। आपकी सेवा में आप बच्चों के लिए एक उदाहरण बनें। आपके कार्य आपके शब्दों से अधिक जोर से बोलते हैं।
2. अपने विद्यार्थियों के साथ ईमानदार रहें। उन्हें दो सीढ़ियॉ दिखाये, और उन्हें समझने में मदद कीजिए कि कौन सी सीढ़ी चढ़ने के लिये सही है।
3. आपकी सेवकाई के द्वारा आप बच्चों को प्रशिक्षित करें कि कैसे चढना चाहिए। अधिकतर मामलों में, वे अपने आप से यह नहीं करेंगे। आप उनके शिक्षक हो, सुनिश्चित करें कि आप उन्हें चीजों को केवल याद ही नहीं करा रहे बल्कि उन्हें जीना भी सिखा रहे हो।

आईए, मैं और आप शुरूआत करें कि बच्चे सही सीढ़ी पर चढ़ें, अपने बचपन से ही, ताकि हमारे पास अच्छे प्रशिक्षित सैनिक हों जिनकी परमेश्वर को ज़रूरत है।

यह बहुत ज़रूरी है कि हम सीढ़ी पर चढ़ें, किन्तु हमें इस बात का ध्यान देना है कि क्या हम सही सीढ़ी पर हैं। तब ही हम कैडिट से सैनिक और सैनिक से सूबेदार और फिर सूबेदार से मैजर बन पाएंगे। तब परमेश्वर वास्तव में हमें दुनियाभर के बच्चों के जीवन में प्रभाव डालने के लिए इस्तेमाल कर पाएगा।

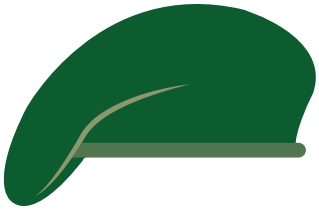

अगर हम युद्ध में हैं तो रंग भरवाने और सही बातें रटाने से फायदा नहीं होगा।

यह न भूलें कि हम युद्ध में है ।

अगर हम सचमुच युद्ध में हैं तो दिखावे के लिए परमेश्वर के आज्ञाकारी बनने से कुछ लाभ नहीं होगा, जो कि कलीसिया के राजनैतिक मामलो की ज्यादा चिंता करते हैं।

हमें इस सेना में वास्तविक अफसर चाहिए।

हमें स्त्री और पुरषों की ज़रूरत है जो परमेश्वर के साथ मिलकर अगली पीढ़ी को खड़ा करें। मैं परमेश्वर की सेना में ऐसा अफसर बनने की इच्छुक हूं। क्या आप मेरे साथ शामिल होंगे?

मसीह में,
बहन क्रिस्टीना

बच्चों की सेवकाई संसाधनों के लिए आपका नया सोता

www.ChildrenAreImportant.com

हमारी सामग्री डाउनलोड, उपयोग, मुद्रण और अन्य चर्च और संगठनों मे वितरण के लिए मुफ्त उपलब्ध है।

कोई कॉपीराइट नहीं, जी हां!! तो आईए और जितना ज्यादा आप चाहते हो, उतना प्रिंट करें। यहां तक कि आप इसे बेच भी सकते हैं! और वे हमेशा हमारे वेबसाइट में बिल्कुल मुफ्त उपलब्ध रहेंगे।

क्योंकि मिलकर काम करने के द्वारा हम ज्यादा से ज्यादा बच्चों तक पहुंच सकते हैं!

Vision Rise up
Warrior Hindi
20132

www.ChildrenAreImportant.com
info@childrenareimportant.com
We are located in Mexico.
DK Editorial Pro-Visión A.C.

बच्चें महत्वपूर्ण है